एरोमा मिशन के अन्तर्गत सगंध पौधों पर

एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

महाकुंभ क्षेत्र में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद द्वारा स्थापित प्रकृति महाकुंभ–वानिकी एवं पर्यावरण जागरूकता शिविर में पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं सी.एस.आई.आर.–सीमैप, लखनऊ के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 24.01.2025 को एरोमा मिशन के अन्तर्गत सगंध पौधों पर एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं पौध सामग्री वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मंचासीन अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह द्वारा स्वागत भाषण में कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया। उन्होने बताया कि कृषिवानिकी में सगंध पौधों को अपनाने के द्वारा किसानों की आय में वृद्धि के साथ ही पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के हेतु इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। विशिष्ट अतिथि डॉ. ऋतु त्रिवेदी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, केन्द्रीय औषधीय अनुसंधान संस्थान, लखनऊ द्वारा सगंध पौधों की खेती द्वारा हरित आवरण वृद्धि पर प्रकाश डाला गया। आयोजित कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. हरीश एस. गिनवाल, निदेशक, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर ने आयोजित एरोमा मिशन की सराहना करते हुए औषधीय पौधों एवं सगंध पौधों के मूल्य वर्धन द्वारा किसानों की आय तथा वनावरण की वृद्धि हेतु भारतवर्ष में स्थित परिषद के संस्थानों व केन्द्र के विशेष योगदान पर प्रकाश डाला। शिविर में स्थापित बाँस गैलरी का उद्घाटन डॉ. गिनवाल द्वारा किया गया, जिसमें बाँस के विभिन्न प्रजातियों एवं उत्पादों का प्रदर्शन किया गया। सीमैप के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार ने सभा को सम्बोधित करते हुए सीमैप की गतिविधियों से अवगत कराया साथ ही कहा कि आत्मनिर्भर भारत निर्माण हेतु एरोमा मिशन सहायक सिद्ध हो रहा है। सीमैप के निदेशक, डॉ. प्रबोध कुमार त्रिवेदी ने सुगंधित पौधों विशेषतः मेंथा की खेती के व्यावसायिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज भारत को मेंथा के उत्पादन में उत्तर प्रदेश के किसानों द्वारा ही अग्रणी स्थान प्राप्त हुआ है, मेंथा की खेती द्वारा एक हेक्टेअर से लगभग रूपया पचास हजार का लाभ प्राप्त किया जा सकता है। सीमैप, लखनऊ के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. रमेश श्रीवास्तव द्वारा खस तथा लेमन ग्रास की खेती के व्यावहारिक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। साथ ही कार्यक्रम में प्रतिभागिता कर रहे 100 से अधिक कृषकों को लेमन ग्रास व खस की पौध सामग्री वितरित की गयी। वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव एवं डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा वानिकी, पर्यावरण एवं चेतना शिविर का भ्रमण कराया गया। कार्यक्रम का सफल समन्वयन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। आयोजित कार्यक्रम में केन्द्र के विभिन्न अधिकारी एवं कर्मचारीगण आदि उपस्थित रहे।

एरोमा मिशन

वर्ष 2016 में लैवेण्डर पौधों की खेती को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया गया था, जिसमें सीएसआईआर (वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद) द्वारा निर्धारित उन्नत प्रौद्योगिकी के माध्यम से सुगंधित उपचार प्रभावित होते हैं। इसके अतिरिक्त, इस मिशन से कृषि, उत्पाद और प्रसंस्करण विकास क्षेत्रों में चयनित हस्तक्षेपों के माध्यम से सुगंध उद्योग में परिवर्तनकारी अन्तर लाने की आशा है। इस मिशन का उद्देश्य पूरे भारत में कृषिविदों या उत्पादकों को मूल्य–संवर्धन और आसवन के लिए तकनीकी और बुनियादी ढांचागत सहायता प्रदान करना है, इसके अलावा कृषिविदों या उत्पादकों को लाभदायक मूल्य सुनिश्चित करने के लिए व्यावहारिक खरीद–वापसी साधनों की सुविधा प्रदान करना भी है।

कार्यक्रम की झलकियाँ

सह-आयोजक : भा.वा.अ.शि.प. - पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र, प्रयागराज

सुगंधित महाकुंभ
दिनांक : 24 जनवरी, 2025
स्थान : वानिकी एवं पर्यावरण चेतना शिविर, सेक्टर-1, परेड ग्राउण्ड, महाकुंभ
आयोजक : सी.एस.आई.आर. केंद्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान (सीमैप), लखनऊ-226015 (उ.प्र.)
सह-आयोजक : भा.वा.अ.शि.प. - पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र, प्रयागराज (उ.प्र.)

सुगंधित महाकुंभ
स्थान : वानिकी एवं पर्यावरण चेतना शिविर, सेक्टर-1, परेड ग्राउण्ड, महाकुंभ
आयोजक : सी.एस.आई.आर. केंद्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान (सीमैप), लखनऊ-226015 (उ.प्र.)
सह-आयोजक : भा.वा.अ.शि.प. - पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र, प्रयागराज (उ.प्र.)

PRAKRITI MAHAKUMBH

संजय कुमार

PRAKRITI MAHAKUMBH
FORESTRY AND ENVIRONMENT AWARENESS CAMP

PRAKRITI MAHAKUMBH
FORESTRY AND ENVIRONMENT AWARENESS CAMP

प्रकृति महाकुंभ

PRAKRITI MAHAKUMBH

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून
(पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार)

बाँस गैलरी का उद्घाटन एवं भ्रमण

प्रदर्शन स्टॉल की झलकियाँ

प्रदर्शन शिविर का भ्रमण

सगंध पौधों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

विद्रोही सामना संवाददाता

प्रयागराज। महाकुम्भ क्षेत्र में भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद द्वारा स्थापित प्रकृति महाकुम्भ-वानिकी एवं पर्यावरण जागरूकता शिविर में पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं सी.एस.आई.आर - सीमैप, लखनऊ के संयुक्त तत्वाधान में एरोमा मिशन के अंतर्गत सगंध पौधों पर एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं पौध सामग्री वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मंचासीन अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह द्वारा स्वागत भाषण में कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने बताया कि कृषिवानिकी में सगंध पौधों को अपनाने के द्वारा किसानों की आय में वृद्धि के साथ ही पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के हेतु इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. ऋतु त्रिवेदी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, केन्द्रीय औषधीय अनुसन्धान संस्थान, लखनऊ द्वारा सगंध पौधों की खेती द्वारा हरित आवरण वृद्धि पर प्रकाश डाला गया।

आयोजित कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. हरीश एस गिनवाल, निदेशक, उष्ण कटिबँधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर ने आयोजित एरोमा मिशन की सराहना करते हुए औषधीय पौधों एवं सगंध पौधों के मूल्य वर्धन द्वारा किसानों की आय तथा वनावरण की वृद्धि हेतु भारतवर्ष में स्थित परिषद के संस्थानों व केन्द्र के विशेष योगदान पर प्रकाश डाला। शिविर में स्थापित बाँस गैलरी का उद्घाटन डॉ. गिनवाल द्वारा किया गया, जिसमें बाँस के विभिन्न प्रजातियों एवं उत्पादों का प्रदर्शन किया गया। सीमैप के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार ने सभा को सम्बोधित करते हुए सीमैप की गतिविधियों से अवगत कराया साथ ही कहा कि आत्मनिर्भर भारत निर्माण हेतु एरोमा मिशन सहायक सिद्ध हो रहा है। सीमैप के निदेशक, डॉ. प्रबोध कुमार त्रिवेदी ने सुगंधित पौधों विशेषतः मेंथा की खेती के व्यावसायिक महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज भारत को मेंथा के उत्पादन में उत्तर प्रदेश के किसानों द्वारा ही अग्रणी स्थान प्राप्त हुआ है, मेंथा की खेती द्वारा एक हेक्टेअर से लगभग रुपया पचास हजार का लाभ प्राप्त किया जा सकता है। सीमैप, लखनऊ के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. रमेश श्रीवास्तव द्वारा खस तथा लेमन ग्रास की खेती के व्यावहारिक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। साथ ही कार्यक्रम में प्रतिभागिता कर रहे 100 से अधिक कृषकों को लेमन ग्रास व खस की पौध सामग्री वितरित की गयी। वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव एवं डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा वानिकी, पर्यावरण एवं चेतना शिविर का भ्रमण कराया गया। कार्यक्रम का सफल समन्वयन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। आयोजित कार्यक्रम में केन्द्र के विभिन्न अधिकारी एवं कर्मचारीगण आदि उपस्थित रहे।

सगंध पौधों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

उर्ध्व नेत्र

प्रयागराज। महाकुम्भ क्षेत्र में भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद द्वारा स्थापित प्रकृति महाकुम्भ-वानिकी एवं पर्यावरण जागरूकता शिविर में पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं सी.एस.आई.आर - सीमैप, लखनऊ के संयुक्त तत्वाधान में शुक्रवार को एरोमा मिशन के अंतर्गत सगंध पौधों पर एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं पौध सामग्री वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मंचासीन अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह द्वारा स्वागत भाषण में कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने बताया कि कृषिवानिकी में सगंध पौधों को अपनाने के द्वारा किसानों की आय में वृद्धि के साथ ही पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के हेतु इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। विशिष्ट अतिथि डॉ. ऋतु त्रिवेदी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, केन्द्रीय औषधीय अनुसन्धान संस्थान, लखनऊ द्वारा सगंध पौधों की खेती द्वारा हरित आवरण वृद्धि पर प्रकाश डाला गया। आयोजित कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. हरीश एस गिनवाल, निदेशक, उष्ण कटिबँधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर ने आयोजित एरोमा मिशन की सराहना करते हुए औषधीय पौधों एवं सगंध पौधों के मूल्य वर्धन द्वारा किसानों की आय तथा वनावरण की वृद्धि हेतु भारतवर्ष में स्थित परिषद के संस्थानों व केन्द्र के विशेष योगदान पर प्रकाश डाला। शिविर में स्थापित बाँस गैलरी का उद्घाटन डॉ. गिनवाल द्वारा किया गया, जिसमें बाँस के विभिन्न प्रजातियों एवं उत्पादों का प्रदर्शन किया गया। सीमैप के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार ने सभा को सम्बोधित करते हुए सीमैप की गतिविधियों से अवगत कराया साथ ही कहा कि आत्मनिर्भर भारत निर्माण हेतु एरोमा मिशन सहायक सिद्ध हो रहा है। सीमैप के निदेशक, डॉ. प्रबोध कुमार त्रिवेदी ने सुगंधित पौधों विशेषतः मेंथा की खेती के व्यावसायिक महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज भारत को मेंथा के उत्पादन में उत्तर प्रदेश के किसानों द्वारा ही अग्रणी स्थान प्राप्त हुआ है, मेंथा की खेती द्वारा एक हेक्टेअर से लगभग रुपया पचास हजार का लाभ प्राप्त किया जा सकता है। सीमैप, लखनऊ के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. रमेश श्रीवास्तव द्वारा खस तथा लेमन ग्रास की खेती के व्यावहारिक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। साथ ही कार्यक्रम में प्रतिभागिता कर रहे 100 से अधिक कृषकों को लेमन ग्रास व खस की पौध सामग्री वितरित की गयी। वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव एवं डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा वानिकी, पर्यावरण एवं चेतना शिविर का भ्रमण कराया गया। कार्यक्रम का सफल समन्वयन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। आयोजित कार्यक्रम में केन्द्र के विभिन्न अधिकारी एवं कर्मचारीगण आदि उपस्थित रहे।

सगंध पौधा किसानों के लिए लाभकारी : संजय सिंह

प्रकृति महाकुम्भ–वानिकी एवं पर्यावरण जागरूकता शिविर में मौजूद अतिथि।

महाकुम्भ नगर, संवाददाता। मेला क्षेत्र में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद की ओर से स्थापित प्रकृति महाकुम्भ–वानिकी एवं पर्यावरण जागरूकता शिविर में एरोमा मिशन के अंतर्गत सगंध पौधों पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम हुआ। पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र, प्रयागराज व सीएसआईआर लखनऊ के कार्यक्रम में केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने कहा कि कृषि वानिकी में सगंध पौधे किसानों के लिए लाभकारी है। इसको अपनाने से किसानों की आय में वृद्धि संग पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिलता है।

विशिष्ट अतिथि केंद्रीय औषधीय अनुसंधान संस्थान लखनऊ की डॉ. ऋतु द्विवेदी ने सगंध पौधे की खेती के जरिए हरित आवरण की वृद्धि के महत्व को रेखांकित किया। शिविर में बांस गैलरी का उद्घाटन डॉ. हरीश एस गिनवाल ने किया। सीएसआईआर के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत निर्माण के लिए एरोमा मिशन सहायक सिद्ध हो रहा है। कार्यक्रम में प्रतिभागिता कर रहे सौ से अधिक किसानों को लेमन ग्रास व खस का पौधा वितरित किया गया। कार्यक्रम में डॉ. प्रबोध कुमार द्विवेदी, आलोक यादव, डॉ. अनुभा श्रीवास्तव, डॉ. अनीता तोमर आदि मौजूद रहे।

वानिकी, पर्यावरण चेतना शिविर में एरोमा मिशन के अंतर्गत सगंध पौधों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

कार्यालय संवाददाता

प्रयागराज। महाकुम्भ क्षेत्र में भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद द्वारा स्थापित प्रकृति महाकुम्भ-वानिकी एवं पर्यावरण जागरूकता शिविर में पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं सी.एस.आई.आर - सीमैप, लखनऊ के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 24.01.2024 को एरोमा मिशन के अंतर्गत सगंध पौधों पर एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं पौध सामग्री वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मंचासीन अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह द्वारा स्वागत भाषण में कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने बताया

कि कृषिवानिकी में सगंध पौधों को अपनाने के द्वारा किसानों की आय में वृद्धि के साथ ही पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के हेतु इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। विशिष्ट अतिथि डॉ. ऋतु त्रिवेदी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, केन्द्रीय औषधीय अनुसन्धान संस्थान, लखनऊ द्वारा सगंध पौधों की खेती द्वारा हरित आवरण वृद्धि पर प्रकाश डाला गया। आयोजित कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. हरीश एस गिनवाल, निदेशक, उष्ण कटिबँधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर ने आयोजित एरोमा मिशन की सराहना करते हुए औषधीय पौधों एवं सगंध पौधों के मूल्य वर्धन द्वारा किसानों की आय तथा वनावरण की वृद्धि हेतु भारतवर्ष में स्थित परिषद के संस्थानों व केन्द्र के विशेष योगदान पर प्रकाश डाला। शिविर में स्थापित बाँस गैलरी का उद्घाटन डॉ. गिनवाल द्वारा किया गया, जिसमें बाँस के विभिनन्प्रजातियों एवं उत्पादों का प्रदर्शन किया गया। सीमैप के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार ने सभा को सम्बोधित करते हुए सीमैप की गतिविधियों से अवगत कराया साथ ही कहा कि आत्मनिर्भर भारत निर्माण हेतु एरोमा मिशन सहायक सिद्ध हो रहा है। सीमैप के निदेशक, डॉ. प्रबोध कुमार त्रिवेदी ने सुगंधित पौधों विशेषतः मेंथा की खेती के व्यावसायिक महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज भारत को मेंथा के उत्पादन में उत्तर प्रदेश के किसानों द्वारा ही अग्रणी स्थान प्राप्त हुआ है, मेंथा की खेती द्वारा एक हेक्टेअर से लगभग रुपया पचास हजार का लाभ प्राप्त किया जा सकता है। सीमैप, लखनऊ के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. रमेश श्रीवास्तव द्वारा खस तथा लेमन ग्रास की खेती के व्यावहारिक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। साथ ही कार्यक्रम में प्रतिभागिता कर रहे 100 से अधिक कृषकों को लेमन ग्रास व खस की पौध सामग्री वितरित की गयी। वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव एवं डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा वानिकी, पर्यावरण एवं चेतना शिविर का भ्रमण कराया गया। कार्यक्रम का सफल समन्वयन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। आयोजित कार्यक्रम में केन्द्र के विभिनन् अधिकारी एवं कर्मचारीगण आदि उपस्थित रहे।